जोमयीर जीनी की दो कविताएँ

(1)

इगिन और ओयोक

'आ-न'[1] के साथ 'इगिन'[2] लिए
जंगल जाया करती थी
भर-भर टोकरी
सब्जी बटोरा करती थी
'आ-बो'[3] के साथ 'ओयोक'[4] लिए
जंगल जाया करती थी
घर में घेरा लगाने
बांस लाया करती थी
इगिन और ओयोक के बीच
कभी चुनना नहीं पड़ा था
बेटी हूँ, बेटा नहीं
कभी सुनना नहीं पड़ा था।

स्कूल के फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में-
पाँच वर्षीय, मैं
'आ-न दोन्यी'[5] नहीं
'आ-बो तानी'[6] बनी थी मैं
'गा-ल'[7] नहीं
'हा-ब'[8] पहनी थी मैं,
इगिन और ओयोक के बीच
कभी चुनना नहीं पड़ा था
बेटी हूँ, बेटा नहीं

कभी सुनना नहीं पड़ा था।

यूं ही,

बचपन
बचपने में बीत गया
और आपकी छोटी-सी बेटी
सयानी हो गई;
हुए मेरे रिश्तेदारों में बहुत चर्चे
कहा,
'कितना करोगे और इसपे खर्चे?'
हुई मेरे जवान होने की खूब तैयारी
अर्जी जारी की है बहुत भारी
जन-सभा ने जताई शंका
दूल्हा ढूंढ़ो कोई ढंग का!
वो कहने लगे।

वो कहने लगे
कि मेरे सपनों में भी होंगे बंधन
कि मैं अपनी नहीं, हूँ मैं पराया धन
कि मेरी लकीरें यूं ही बनकर आई हैं
इनमें क्या ही दोष,
क्या ही दुहाई है।
वो कहने लगे।
वो कहने लगे
कि मेरा अस्तित्व मुझ से नहीं
पारिवारिक दायित्व से है।

मैं कहती हूँ
आपके निगाहों से निगाहें
बराबर- कर चल सकती हूँ
हर रंग- रूप में ढल सकती हूँ

[1] आ-न : माँ
[2] इगिन : टोकरी
[3] आ-बो : पिता
[4] ओयोक : तलवार
[5] आ-न दोन्यी : सूर्य देवी
[6] आ-बो तानी : (गालो समुदाय के) पहला पितृ पुरुष
[7] गा-ल : (गालो समुदाय के) महिलाओं का पोशाक
[8] हा-ब : (गालो समुदाय के) पुरुषों का लंगोट

सारा-का-सारा
बस एक भ्रम ही तो है
देखिए हमारे एक-से कर्म ही तो हैं
इगिन और ओयोक के बीच
कभी चुनना न पड़े
बेटी हूँ, बेटा नहीं
कभी सुनना न पड़े।

(2)

बेटी हूँ, बेटी रहूँगी

अरे! बेटा
सुनो! बेटा
ऐसा करना बेटा
वैसा करना बेटा
अरे! बेटा

अरे! बेटा
कहकर न पुकारो मुझे
नहीं बन सकती हूँ आपका बेटा।
नहीं बनना चाहती हूँ आपका बेटा
बेटी हूँ
बेटी रहूँगी!

इतनी शिद्दत से
इस झूठ को
न पिलाओ मुझे,
कि कहीं ये
सच बनकर
मेरी रगो में दौड़े
बेटी हूँ
बेटी रहूँगी!

एक राजकुमार आएगा,
तुम्हें सफ़ेद घोड़े पर
बैठा कर ले जाएगा,
दूर पहाड़ी के उस पार
बसाओगे तुम अपना संसार
तलाश है मुझे
इन आँखों को
न उस राजकुमार का
तलाश है, इन आँखों को
तो उस घोड़ी का,
जिस घोड़ी पर बैठकर,
लगाम अपने हाथों लेकर,
(क्योंकि आपको तो लगता है
लगाम ही नहीं मेरी ज़बान पर,
है न?)
तो उस घोड़ी पर बैठकर
लगाम अपने हाथों लेकर
जाऊँगी मैं,
समाज के उस पार
जहाँ समझ हो भरपूर।
जहाँ बचपन में मुझे
गुड्डा-गुड्डी तक
न सीमित रहना पड़े
जहाँ यह कहना न पड़े
कि माँ,
भाई को तो आपने
ऐसा टोका ही नहीं था

जहाँ मेरी कीमत
इस चेहरे से न तौला जाए
है हिम्मत?
इन पंखों को चलो खोला जाए
इन आँखों को चलो खोला जाए
जिसमें, हजार सपने हैं
बुनी हैं तमाम रेखाएं

ये रेखा
ये रेखा जो काफ़ी पुरानी है,
ये रेखा जो है काफ़ी पुरानी
लो लड़की हो गई है सयानी
हाँ,
माना
माना कि ये कंधे कमजोर हैं,
माना कि ये कंधे कामज़ोर हैं
इनमें थोड़ा- कम,
थोड़ा-कम- ज़ोर है;
पर दे सकती है
ये आपको कंधा
क्यों ये कानून है अंधा?
क्यों ये कानून है अंधा?
बेटी हूँ,
बेटी रहूँगी
इतनी शिद्दत से
इस झूठ को
न पिलाओ मुझे,
कि कहीं ये
सच बनकर
मेरी रगों में दौड़े
बेटी हूँ,
बेटी रहूँगी।

---

*(**लेखकीय परिचय:** जोमयीर जीनी अरुणाचल प्रदेश की उदीयमान कवयित्री हैं। आपका पहला काव्य-संग्रह 'सैनिटी इन वैनिटी' चर्चित रहा है। आपका दूसरा काव्य-संग्रह 'तुम्हारी प्रिय' अंग्रेजी और हिंदी में साथ-साथ प्रकाशित हुआ, जिसने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। वर्तमान में आप राजकीय दंत महाविद्यालय एवं चिकित्सा केंद्र, आरआईएमएस, आंध्र प्रदेश में अपनी सेवा दे रही हैं। मोबा. 9774623215, ई-मेल : jomyirjini@gmail.com)*